02 / 01 / 79 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

संपूर्णता की समीपता से विशव परिवर्तन की समीपता की अनुभूति

➢➢ ब्राह्मण जीवन में पुरुषार्थ की गति की चेकिंग

➳ _ ➳ मैं सर्वश्रेष्ठ ब्राह्मण आत्मा हूं

→ जन्म लेते ही मुझ आत्मा ने ज्ञान के तीसरे नेत्र से बाप दादा को पहचाना

→ मुझ आत्मा ने बाप दादा से इस ब्राह्मण जीवन में कई वायदे किए हैं

→ उन सब वायदों को मुझ आत्मा ने कहां तक निभाया है उसकी चेकिंग करती हूं

■ एक -एक वायदा एक-एक संकल्प के रूप में मेरे सामने आ रहा है

■ बापदादा को सम्मुख देखती मैं आत्मा सर्व रहे हुए वायदों को निभाने का संकल्प करती हूं

➳ _ ➳ बापदादा के सम्मुख मैं आत्मा आकारी देह में वतन में हूं

→ बाबा मुझे विजयी भव का वरदान देते हैं

→ विजय मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है इस संकल्प का स्वरूप बनती जा रही हूं

→ जीवन की इस यात्रा को एक खेल समझ देख रही हूं

→ सदा बाप दादा के साथ हर दृश्य में हर कर्म में मैं स्वयं की विजय देख रही हूं

→ मैं विजय आत्मा हूं और सदा विजय रहूंगी

■ इस ऊँच स्वमान से हर कर्म में मेरी सफलता होती जा रही है

■ विजय मेरे गले का हार हैं

■ पुरुषार्थ की स्टेज समाप्त हो संपूर्ण स्टेज का अनुभव कर रही हूँ

➢➢ दाता वर-दाता स्टेज की अनुभूति

➳ _ ➳ मैं मास्टर दाता वरदाता हूं

→ अपने सम्मुख वतन में विकारों के परवश आत्माओं को देख रही हूं

→ हर आत्मा के प्रति रहम की भावना रख सर्व आत्माओं को विकारों से छुड़ाने के लिए सफलता मुर्त का वरदान दे रही हूं

■ हर आत्मा स्वयं को पहचान स्वराज्य अधिकारी बन सब विकारों से छुटती जा रही हैं

■ मैं महादानी वरदानी आत्मा हूं

➳ _ ➳ अपनी संपूर्णता की स्टेज में मैं आत्मा बीती को बिंदी लगा सब व्यर्थ से मुक्त होती जा रही हूं

→ मेरा हर संकल्प समर्थ है

→ हर संकल्प विश्व कल्याणकारी हैं

→ मेरा हर श्रेष्ठ कर्म मुझे संतुष्टता की अनुभूति करा रहा है

→ स्वयं को विशेष आत्मा समझ मैं करम में आती हूं

■ हर आत्मा की विशेषता को देख सर्व के प्रति कल्याण की भावना से भरपूर हूं

■ हर आत्मा को सहयोग और स्नेह दे परमात्म मिलन कराती हूँ

■ हर आत्मा के प्रति रूहानी दृष्टि वृत्ति की वाइब्रेशन मेरे चारों ओर फैल रही हैं

■ हर आत्मा मेरे संबंध संपर्क में आते ही भरपूरता का अनुभव कर रही है